भूमिका

" सब हों तो सेहन में बड़ी अच्छी लगे हवा।
कोई न हो तो खाक उड़ती फिरे हवा।

--- अज्ञात अलीम

उपन्यास समाप्त प्रेमचन्द ने 'इस्लामी सभ्यता' नामक एक निबंध 'प्रताप' (दिसंबर ९५२५) में लिखा था। उसमें उन्होंने भारतीय हिंदू और मुसलमानों के अंतर्विरोधों पर टिप्पणी करते हुए लिखा था— "हिंदू और मुसलमान दोनों १,००० वर्षों से हिंदुस्तान में रहते चले आते हैं, लेकिन अभी तक एक-दूसरे को समझ नहीं सके हैं। हिंदू के लिए मुसलमान एक रहस्य है, मुसलमान के लिए हिंदू एक मुआम्मा। न हिंदू को इतनी पूर्णता है कि इस्लाम के तत्त्वों की छानबीन करे और न मुसलमान को इतना अवकाश कि हिंदू-धर्म-तत्त्वों के सागर में गोते लगाए। दोनों एक-दूसरे में बे सिर पीर की बातों की कल्पना करके मास्ता फुटावल करने पर आमादा रहते हैं। हिंदू समझता है दुनिया भर की बुराइयां मुसलमानों में भरी पड़ी हैं। इनमें न दया है न धर्म, न सदाचार न संयम। मुसलमान समझता है हिंदू पत्थरों को पूजने वाला, गदरन में धागे डालने वाला, मास्ता रंगने वाला और दाल—भात खाने वाला पशु है। दोनों एक-दूसरे के साथ करते हैं। और दोनों दलों में जो बड़े से बड़े घरमाच्छार हैं वे इस भेद—भाव में सबसे आगे हैं, मानो भेष और विरोध ही धर्म का प्रधान लक्षण है।"

इसके साथ ही प्रेमचन्द इस बात की भी स्पष्ट घोषणा करते हैं— "वह दिन दूर नहीं है जब हिंदू और मुसलमान दोनों अपनी गलती पर पछताएंगे, और अगर मनुष्यता और सज्जनता से प्रेषित होकर नहीं तो आत्मरक्षा के लिए संयुक्त होना आवश्यक समझेंगे।"  

प्रेमचन्द की यह आवाज़ बीसवीं शताब्दी के सम्पूर्ण भारतीय सामाजिक जीवन पर नजर डालते हुए किसी भी संवेदनशील साहित्य के विद्वानों को उद्धेषित करती है। यह ‘पश्चात्याश्च’ समकालीन भारतीय सामाज के भयावह
कठिन तथा त्रासद यथार्थ का बीजभाव है। भारतीय मुस्लिम संस्कृति का अध्ययन समूह मानवीय संस्कृति के वर्क्स करने की यही मेरी प्रेरणा—भूमि रही है।

लगभग सौ वर्षों की अंतर्यात्मा में हिंदी कहानी जहां 'बेताल पंचीसी', 'सिहासन बतीसी 'गुलिस्ता—बोस्ता', 'शीरी—फरहाद', 'लैला—मजनू' आदि किस्सों में अपने बीज रूप में प्रारंभ हुई थी, वह क्रमशः विकसित होती हुई, आज पूर्ण परिपक्व होकर, साहित्य की एक केंद्रीय विधा के रूप में प्रतिष्ठित हो चुकी है। वर्तमान: हिंदी कहानी की यह प्रतिष्ठा—समकालीन बहुरचन्द्रीय तथा बहुआयामी गतिविधियाँ जटिल यथार्थ को कभी तो समग्र रूप में, कभी छोटी—छोटी घटनाओं, संवेदनात्मक चित्रों और जीवन के विभिन्न भाग्यांतर्गत दृश्यालेखों द्वारा अपेक्षाकृत लघु फार्म में, सार्थक आभायकता के कारण है।

20 वीं शताब्दी के नारे के बीच जलते हुए पंजाब, असुरक्षित और लहुलुहान प्रधानमंत्री, बोफार्स की गरज, मंदिर और कम्पन्डल की ओर राजनीति के बीच दम तोड़ती मानवता, विभाजन का दंश, हत्या, उपभोक्तावाद, उत्तर आधुनिकता, इतिहास का अंत, नई अर्थव्यवस्था, भूमिकालिकरण, इंडियनिक चालाने का प्रसार, बहुराष्ट्रीय कंपनियों की चमक—दमक, दलित उभार, सामाजिक उन्माद की भीषण तस्वीर, बाबरी मस्जिद विध्वंस और धार्मिक आस्थाओं पर चोट, गोधराफ़ांड और गुजरात में जलती हुई मानवता तथा नरसंहार का रूप—रंजित यथार्थ आज की कहानी की विषय—वर्तमान है। निःसंदेह उक्त सांस्कृतिक—सार्थकताओं के बीच कहानी की सबसे भूमिका ही आज इसे साहित्य की अति महत्त्वपूर्ण विधा के रूप में प्रतिष्ठित करती है।

यह स्वाभाविक—सी बात है कि साहित्य, समाज का प्रतिविम्ब होता है। 20 वीं शताब्दी से भारत में विभिन्न परिवर्तन दृष्टिगोचर होते हैं। ये परिवर्तन राष्ट्रीय—अंतरराष्ट्रीय स्तरों पर राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक रूप में होते रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप विभिन्न स्तरों पर नए मूल्य तथा नए संबंध स्थापित हुए हैं, जिन्होंने क्रमशः देशान्तरालसार कहानी की संवेदना और स्वरूप को बदला है। अतः: कहानी की जो अविरल धारा बही थी, वह अपनी पूर्ववर्ती कहानियों का संवेदनात्मक, रूपसंगत विस्तार करती हुई आगे बढ़ी है। कहानी ने सूक्ष्म से सूक्ष्म स्तरों को उभारा है। मुस्लिम संस्कृति भी उसके कैनवास में
भारत—पाकिस्तान का विभाजन होता है, मानवीय संबंधना इत्यादि होती है, भय और असुरक्षा बढ़ती है, सार्वजनिक उन्माद और मानव—मानव के बीच दूसरे पैदा होती है, धार्मिक कटौतियाँ को बढ़ावा मिलता है। निश्चितता तौर पर ऐसी रिश्तों जो क्षािातन्त्र पर अवश्य पड़ा है। हिंदी कहानियों ने इसे व्यापक रूप से व्यक्त किया है।

जहां तक भारतीय मुसलमान का साराहन है, तो यदि हम इस पूरी सहसंधि को देखें तो प्रारंभ से ही हिंदू और मुसलमान— दो संप्रदाय प्रमुख रूप से भारत—भूमि पर उभरकर सामने आते हैं। और जहां भारतीय हिंदू संस्कृति अपना विस्तार करते आगे बढ़ती हैं, वहीं उसी के समानांतर मुसलमान संस्कृति भी अपने विशिष्ट रूप में विकसित होती है। अपनी रहन—सहन, भाषा—बोली, तीज—त्यौहार, रीति—रिवाज, खान—पान इत्यादि में वह एक खास तरह के दर्शन देती हैं। यह बात महत्वपूर्ण है कि भारतीय मुसलमान संस्कृति, भारतीय हिंदू संस्कृति में बहुत हद तक घुल—मिल गई है। मुसलमान संस्कृति ने हिंदू संस्कृति से और हिंदू संस्कृति ने मुसलमान संस्कृति से बहुत—कुछ ग्रहण किया है इससे उद्भूत जो संस्कृति बनी उसे 'भारतीय संस्कृति' का उदात्त रूप कहा जा सकता है। अपने खान—पान, वेश—भूषा, रहन—सहन इत्यादि में भारतीय मुसलमान और हिंदू इतना घुल—मिल गया कि भेद करना कठिन हो गया, इसे हिंदी कहानियों ने व्यापक रूप से प्रकट किया है।

यद्यपि वर्ण—व्यवस्था जैसी कोई दर्ज बनाया मुसलमान समाज में नहीं है। तथापि संस्कृति, पाठ, जुलाही और तेली, सिद्दैदीकी और धोबी, बेहना और कसाई इत्यादि दर्जनवर्षों इस पर हिंदू संस्कृति के प्रभाव को दर्शाती है। मेरी समझ रही है कि 'साझी संस्कृति तथा साझी विरासत' को आज सबसे ज्यादा शोध करने, रेखांकित करने तथा स्थापित करने की आवश्यकता है। बीसवीं शताब्दी की हिंदी कहानियों में वर्गित मुसलमान संस्कृति के विशेषज्ञ को शोध का विषय चुनने की मेरी यही सोच रही है। हिंदी कहानियों के व्यापक फलक में मुसलमान संस्कृति पर अल्प मात्रा में ही लिखा गया है लेकिन जितना भी लिखा गया है, वह भारतीय मुसलमान संस्कृति का जीता—जागता दस्तावेज है।
तरह से प्रेमचंद ने मुस्लिम संस्कृति पर लिखने की जो परंपरा प्रारंभ हुई थी वह अविरल रूप से आज भी विधान है। मुस्लिम संस्कृति पर एक से एक श्रेष्ठ रचनाएं आई हैं, जिन्होंने भारतीय मुस्लिमों के यथार्थ की एक—एक सांसों का शब्दों की शकल में, जीवंत रूप में, टंकित किया है। अमृतलाल नागर जैसे लेखकों ने तो मुस्लिम जीवन के लेखन को एक मिशन के रूप में लिया है। यह बात अलग है कि भारतीय नवाबी—संस्कृति पर उन्होंने सर्वाधिक लिखा है, पर इससे भारतीय मुस्लिम संस्कृति की एक बात गी तो मिल ही जाती है। यशपाल आदि ने मुस्लिम जीवन के यथार्थ को उभाने का प्रयास किया है। इसके साथ ही विषु भ्राकर, 'उग्र,' 'अशक,' मोहन राकेश, स्वायं प्रकाश, नमिता सिंह, शानी, साजिद रशिद, गुलजार, अबुदुल बिरिमललाह, आलमशाह खान, मेहदूनिसा परवेज, मंजूर एहतेशाम इत्यादि ने बहुत हद तक भारतीय मुस्लिम संस्कृति का स्वरूप स्पष्ट किया है। इस संदर्भ में स्वायं प्रकाश की ' पार्टीशन ' और गोविन्द मिश्र की ' जुमराली मिया ' कहानियाँ मील का पथ हैं।

बीसवीं शताब्दी के हिंदी कथा—साहित्य में वर्णित—विचित्र मुस्लिम मूल्यांकन—आलोचना से वर्तमान में हमारी एकता के आहत और बिखर गए तत्त्वों को जोड़ने तथा साजी संस्कृति को पहचानने में प्रस्तुत शोध प्रबन्ध कुछ पहल कर सके, तो में अपना श्रम सार्थक समझूगा।

प्रस्तुत शोध—प्रबन्ध छः: अध्यायों में विभक्त है।

अध्याय—एक में बीसवीं शताब्दी के भारत का राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक संदर्भ में विवेचन किया गया है। चूंकि आचार्य शुकल के लेखे समय—समाज की चित्र—वृत्ति का प्रभाव साहित्य पर अवश्य होता है, अतः उपयुक्त स्थितियों का विवेचन आवश्यक प्रतीत हुआ। इसमें साहित्य और समाज के संबंध को ध्यान में रखते हुए वर्तमान परिस्थितियों में धर्मोन्माद की राजनीति तथा रामजन्मभूमि आंदोलन और बाबरी मस्जिद विखंड तक के परिदृश्य पर विचार किया है।

अध्याय—दो में हिंदी कहानी की महत्ता को ध्यान में रखते हुए उसके अर्थ, परिभाषा, विमर्श और आधुनिक युग की एक विद्या के रूप को स्वीकारते हुए विभिन्न कालों में विकास को देखते हुए समकालीन कहानी के वर्तमान
परिदृश्य तक को दर्शाने का प्रयास किया है।

अध्याय-पाँच में मुसलमान संस्कृति और भारतीय हिंदू संस्कृति की अर्थ, परिभाषा, स्वरूप तथा प्राचीन और मध्यकालीन भारत की मुसलमान संस्कृति, अंग्रेज़ी शासन में उसके बदलते स्वरूप के साथ ही भारतीय संस्कृति, चित्र, वास्तु इत्यादि लिखित कलाओं में मुसलमान संस्कृति के प्रभाव को रखा अंकित करते हुए भारतीय हिंदू और भारतीय मुसलमान संस्कृति के गंगा-जमुना स्वरूप पर विचार किया है।

अध्याय-चार में बीसवीं शताब्दी के प्रमुख तेजस कहानीकारों का परिचय सहित उनकी कहानियों में मुसलमान जीवन के प्रतिबिंब पर विचार हुआ है।

इसमें बहुत से ऐसे लेखक छोटे गए होंगे जिन्होंने मुसलमान संस्कृति पर लिखा होगा। यहाँ मेरा प्रयास उन्हीं लेखकों को लेना रहा है, जिनमें मुसलमान संस्कृति कथा-वर्णन के बीच न आकर स्वतंत्र और प्रभावी रूप से आई हो। इनमें वे लेखक भी शामिल हैं, जिन्होंने मात्र एक कहानी में ही भारतीय मुसलमान संस्कृति और उनकी तस्वीरें को व्यक्त कर दिया है।

अध्याय-पाँच में हिंदी कहानियों में मुसलमान संस्कृति की अभिव्यक्ति किसे रूप में हुई है इसे देखने के क्रम में मुसलमानों के रहन-सहन, खान-पान, वेश-भूषा, तीज-त्योहार, भाषा-बोली, रीति-रिवाज, इस्लामी नियम पालन का भारतीय संस्कृति से समानता रखना इत्यादि बिंदुओं पर विचार किया है।

अध्याय-चौथे में भारत विभाजन की तात्पर्य और वास्तव मरिज़ विधवाओं तक की यात्रा में भारतीय मुसलमानों की तात्पर्य, उनकी अर्थिता के संकट, अर्थव्यवस्था की भावना, विश्वसनीयता के संकट के साथ ही हिंदी कहानी के उस वर्तमान सच को भी प्रदर्शित करने का प्रयास किया है, जिस्ने इस कठिन समय में राम-रहीम की एकता के भारतीय संस्कृति के आदर्श के उदात्त रूप पर — 'अंधकार में जैसे प्रकाश' पर अवश्य ही प्रकाश डाला है।

सबसे अंत में उपसंहार है, जिसमें उपर्युक्त समस्त अध्यायों की निष्पादित, निष्कर्षों को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया गया है।

शोधप्रबंध के विषय चर्चा तथा कार्य करने की अनुमति प्रदान करने के क्रम में शोधसमिति डॉ॰रामोलोरोसीविद्यालय का मैं विशेष आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे यह महत्त्वपूर्ण अवसर प्रदान किया।
मैं अपने निर्देशक डॉ० श्री राजेश कुमार मल्ल जी के प्रति अत्यधिक आभार प्रकट करता हूँ— जिन्होंने बड़े भैया जैसा स्नेहित वरदहस्त आर्थीवाद के रूप में सदैव ऊपर रखा— उन्हीं के सहयोग, अपनत्व, प्रेरणा और लोहार्द का प्रतिष्ठित है यह शोध-प्रबंध !

मैं अपनी शिक्षका डॉ० श्रीमती श्रद्धा सिंह जी को विशेष आभार प्रकट करना चाहूँगा जिन्होंने समय-समय पर पूर्ण सहयोग और स्नेह दिया।

मैं अपने माता-पिता तथा घर के प्रत्येक सदस्यों के प्रति भी सादर आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने इस कष्ट-साध्य श्रम के बाद भी मुझे अपने ममत्व से इस श्रम का अनुभव नहीं होने दिया।

मैं उन संस्थाओं/व्यक्तियों के प्रति भी आभार प्रकट करता हूँ, जिनका सहयोग मुझे प्राप्त हुआ। इनमें— 'अरविंद पुस्तकालय ', रूढ़ीली तथा उसके सचिव श्री केलाश नारायण तिवारी जी ', प्रेमचंद साहित्य संस्थान ' गोरखपुर, इलाहाबाद बुक डिपो लखनऊ ', श्री शमशेर अहमद खान जामिया मिलिया विद्वि० नई-दिल्ली, डॉ० रामदेव शुक्ल एवं डॉ० परमानन्द श्रीवास्तव (आचार्य एवं अध्यक्ष गोरखपुर विद्वि०) तथा अपने मित्रों— श्री मोहम्मद अरशद खान, श्री फाहीम अहमद, श्री समद हुसैन आबिदी, श्री राजेंद्र गुप्त, श्री रमेश यादव, श्री एकलाक्ष अहमद आदि के प्रति भी आभार प्रकट करता हूँ।

अंत में मैं श्री आफाक अहमद को आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने विद्वत व्यवस्था की लचर सिथि में भी कष्ट—साध्य श्रम द्वारा टॉक्सिट कर इस शोध-प्रबंध को अंतिम रूप दिया।

भोमा मसाजिद खान
(मोहम्मद साजिद खान)
शोधकर्ता

दिनांक: 30.12.2012

11/37, सालार, रुढ़ीली,
फेजुआबाद, २२५४११ (उ.प्र.)
दूरभाष: (०५२४१) २२५२८१